

मातृभाषा

मातृभाषा माँ की ही हुई भाषा है क्योंकि जन्म के बाद भाषा सीखने का जब क्रम शुरू होता है तो सबसे पहले हम जो भाषा सीखते हैं वह मातृभाषा ही होती है। भाषा के अन्य रूपों का नाम बाद में आता है।

मातृभाषा के प्रारंभ में निम्नलिखित बातें ध्यान रखनी चाहिए। अर्थात् माँ को अपनी भाषा ही बोलनी चाहिए। अतः माँ को जो अपनी भाषा होगी उसे ही बोलना चाहिए। अतः पहला अर्थ यह हुआ कि मातृभाषा माँ की भाषा ही है। और शिशु माँ से ही सर्वप्रथम भाषा-शिक्षण प्राप्त करता है। अतः यह शब्द माँ की भाषा "अर्थ की दृष्टि" से सार्थक है।

द्वितीय बात यह कि बच्चा खनखने के अतिरिक्त माँ के सम्पर्क में होता है। माँ उसे कुंघ पिलाने, प्यार करने, हँसाने-खेलाते, सोने पर सुप कराने इतने ही अपने शब्दों से खेतान का उपचार करती है। बच्चा माँ की उन्हीं ध्वनियों को सुनता है और उन्हीं का अनुकरण उम्र बढ़ने के साथ करता है। अतः माँ से भाषा सीखते हुए वह उसे भाषा के प्रति आन्तरिक राग से जुड़ जाता है। यह भाषा-राग या भाषा प्रेम माँ की गोंति ही प्रिय होता है। अतः वह अपनी मातृभाषा के प्रति वैसा ही अनुशासक अनुभव करता है। वैसा अनुशासक अपनी माँ के प्रति अनुभव करता है। अतः माँ के सम्मान प्रिय होने के कारण यह भाषा मातृभाषा कहलाती है।

मातृभाषा की कुछ विशेषताएँ होती हैं। इन विशेषताओं को निम्न रूप से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
एन. एन. टी. सी.
बलरामपुर
संगलीकर

बलराम कुमार

(क) भाषा के जितने प्रकार या रूप होते हैं उनमें सबसे पहले हमें मातृभाषा ही प्राप्त होती है। अतः भाषा के विविध प्रकारों में से सबसे महत्व तथा सीखने की प्राथमिकता के आधार पर मातृभाषा प्रथम स्थानीय होती है। अर्थात् हम सबसे पहले मातृभाषा सीखते हैं।

(ख) मातृभाषा की शिक्षा बच्चे को क्रमशः प्राप्त होती है और स्वभाविक रूप में प्राप्त होती है। इसका अर्थ यह है कि मातृभाषा सीखने में हमें बहुत प्रयास नहीं करना पड़ता है और न एक बार सीखना पड़ता है। हम जैसा-जैसा खाने होते हैं वैसे-वैसे परिवार और समाज के साथ चलते-फिरते उठते-बैठते मातृभाषा सीखते चले जाते हैं।

(ग) मातृभाषा का व्याकरण शिथिल होता है और इसका व्याकरण अलग से व्याकरण पढ़ने के प्रति पढ़ना या सीखना नहीं पड़ता है। अतः मातृभाषा में वाक्य के स्तर पर बोलने के क्रम में बड़ा कड़ा क्रम अन्वयस्थित हो जाता है। जैसे - क्या तुम पटना जाओगे के बदले तुम जाओगे क्या पटना अथवा तुम क्या पटना जाओगे भी बोल देने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसी तरह जिन भाषाओं में लिंग-वचन कारक आदि की सहायता होती है उन भाषाओं के बोलने वाले प्रायः नियमानुसार नहीं बोलते हैं। इसके रूप वहाँ देखा जाता है जहाँ लोग किसी मानक भाषा रूप को अपनी मातृभाषा के अनुसार तोड़-भरीड़ देते हैं। जैसे -

1. वह जायेगा ही — ऊ जाएने करेगा।
2. वह आ ही तो रहा है। — वह आइए तो रहा है।

(घ) मातृभाषा का स्वरूप प्रायः मानक नहीं होता है। उसमें एक ही प्रयोग के कई रूप होते हैं। मातृभाषा प्रायः बोली के अंतर्गत आती है।

११ चार कोस पर पानी बदले
आठ कोस पर बानी ११

वर्णम